[श्री रुद्र प्रताप सिंह]

हमारे विरोधी दलों के सम्मानित सदस्यों ने जो विचार यहां पर प्रकट किये हैं, मेरी समझ में वे इस बात से सहमत हैं कि जो हमारी नीतियां हैं, उनको आगे बढ़ाया जाय। उनको केवल इस बात का संदेह है कि हम अपनी नीतियों को आगे बढ़ा सकेंगे अथवा नहीं। मैं उनसे यही कहना चाहता हूँ—

> क्या खबर है कोशिशे नाकाम ही काम आजाये,
> मेरे आगाज पे हसना, मगर अन्जाम के बाद।

इन शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति के अभिभाषण का हृदय से समर्थन करता हूं और आपको पुन: धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय : चूंकि यह अनाउन्स हो चुका है कि कल प्राइम मिनिस्टर जबाव देंगी, इस लिए अब मैं किसी दूसरे को बुलाने मे असमर्थ हूं। श्री राज बहादुर।

---

18 hrs.

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE
NINTH REPORT

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : I beg to present the Ninth Report of the Business Advisory Committee.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS—*Contd.*

श्री शिवनाथ सिंह (झुंझुनू) : सभापति जी, राष्ट्रपति जी ने पिछले 12 महीनों में हमारे देश में जो खास-खास बातें होती हैं उनकी ओर संकेत किया है। हमारी परराष्ट्र नीति के सम्बन्ध में और हमारे देश के अन्दर बहादुरों ने जो बहादुरी दिखाई उसके सम्बन्ध में उल्लेख किया है। अन्त-राष्ट्रीय जगत में आज हमारे देश का जितना मान बढ़ा है उतना पहले कभी नहीं बढ़ा था। आज दुनिया की सभी ताकतें हमें इस बात से आंकने लग गई है कि हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ी ताकत बन गया है। यह जो सारा श्रेय है वह किसको देना चाहते है? हमारे जनसंघ के नेता श्री वाजपेयी जी कहते है कि पावर का कंसेन्ट्रेशन बहुत हो गया है। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि पावर का कसेंट्रेशन किसने दिया है? देश की करोडों जनता ने दिया है। इस बात का श्रेय भी हम जनता को देना चाहें तो इसमें कोई दूसरी बात नही है। आज हमारे देश की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी जिस प्रकार की नीति पर चल रही है, उसपर समूचे देश को विश्वास है। आप कहते है कि कांग्रेस ने जो बहुमत लिया वह गलत तरीके से लिया। लेकिन मैं निवेदन करूंगा कि 1967 के चुनावो के बाद विरोधी दलों का जो रवैया था वही इसके लिए जिम्मेदार है कि कांग्रेस को प्रबल बहुमत मिला।

राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में कहा है कि पिछले महीनों मे जो घटनाए घटी हैं उनसे हमारे देश का गौरव बढ़ा है। राष्ट्रपति जी ने बहुत सी बातो की तरफ संकेत किया है लेकिन कुछ ऐसे मुद्दो की तरफ मैं सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं जो और होने चाहिए। एक तो हमारा जो खेती का उत्पादन है उसके व्यापार का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए क्योंकि आज भी किसानों को वाजिब कीमत नहीं मिलती है। आज हमारी सरकार की जो नीति है वह दोषपूर्ण है और उससे किसान को नुकसान होता है। इससे खेती का उत्पादन आगे घटने वाला है। इसलिए जितने भी फूडग्रेन्स है, जितनी खेती की पैदावार है उसका राष्ट्रीयकरण हो।

दूसरे शिक्षा की प्रणाली में, मैं बार-बार कहता हूं, सुधार होना चाहिए। लेकिन कोई कांक्रीट चीज हमारे सामने नहीं आ रही है शिक्षा में इस तरह का सुधार हो जिसमे कि निश्चित लाइन पर हम चल सकें।

तीसरे, देश के जो पिछड़े हिस्से हैं उनका डेवलपमेंट हो। जो हमारे